

गुरु नानक देव जयंती

प्रलिम्स के लिये:

गुरु नानक देव, सखि धर्म,

मेन्स के लिये:

गुरु नानक देव, महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्वों की शक्तिपूर्ण

चर्चा में क्यों?

8 नवंबर, 2022 को गुरु नानक देव की 553वीं जयंती मनाई गई।



गुरु नानक देव

■ जन्म:

- उनका जन्म वर्ष 1469 में लाहौर के पास तलवंडी राय भोई (Talwandi Rai Bhoi) गाँव में हुआ था जसि बाद में ननकाना साहबि नाम दिया गया।
- वह सखि धर्म के 10 गुरुओं में से पहले और सखि धर्म के संस्थापक थे।

■ योगदान:

- उन्होंने 16वीं शताब्दी में अंतर-धार्मिक संवाद शुरू किया और अपने समय के अधिकांश धार्मिक संप्रदायों के साथ बातचीत की।
- सखिों के पाँचवें गुरु, गुरु अर्जुन (वर्ष 1563-1606) द्वारा संकलित आदि गुरु ग्रंथ में शामिल रचनाएँ लिखी गईं।
 - 10वें सखि गुरु, गुरु गोबिंद सिंघि (वर्ष 1666-1708) द्वारा किये गए परिवर्द्धन के बाद इसे गुरु ग्रंथ साहबि के रूप में जाना जाने लगा।
- उन्होंने भक्ति के 'नरिगुण' (नरिंकार परमात्मा की भक्ति और पूजा) की वकालत की।
- त्याग, अनुष्ठान स्नान, छवि पूजा, तपस्या को अस्वीकार कर दिया।
- सामूहिक जप से जुड़े सामूहिक पूजा (संगत) के लिये नियम नरिधारित किये।
- अपने अनुयायियों को 'एक ओंकार' का मूल मंत्र दिया और जाति, पंथ एवं लिंग के आधार पर भेदभाव किये बिना सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करने पर ज़ोर दिया।

■ मृत्यु:

- उनकी मृत्यु वर्ष 1539 में करतारपुर, पंजाब में हुई।

आधुनिक भारत में गुरु नानक देव की प्रासंगिकता:

- **एक समतावादी समाज का निर्माण:** समानता का उनका विचार नमिनलखित नवीन सामाजिक संस्थानों के रूप में देखा जा सकता है, जो कि उनके द्वारा शुरू किये गए थे।
 - **लंगर:** सामूहिक खाना बनाना और भोजन को वितरित करना।
 - **पंगत:** उच्च एवं नमिन जातों के भेद के बिना भोजन करना।
 - **संगत:** सामूहिक नरिणय लेना।
- **सामाजिक सद्भाव:**
 - उनके अनुसार, पूरी दुनिया ईश्वर की रचना है और सभी एक समान हैं, केवल एक सार्वभौमिक रचनाकार है अर्थात् "एक ओंकार सतनाम" (Ek Onkar Satnam)।
 - इसके अलावा कृपा, धैर्य, संयम और दया उनके उपदेशों के मूल केंद्र में हैं।
- **न्यायपूर्ण समाज का निर्माण:**
 - उन्होंने अपने शिष्यों के सममुख 'कीरत करो, नाम जपो और बंड छको' (काम, पूजा और दान) का आदर्श रखा।
 - उनके धर्म का आधार कर्म के सिद्धांत पर आधारित था और उन्होंने अध्यात्मवाद के विचार को सामाजिक ज़िम्मेदारी एवं सामाजिक परिवर्तन की विचारधारा में परिणत कर दिया।
 - उन्होंने 'दशवंध' (Dasvandh) की अवधारणा या अपनी कमाई का दसवाँ हिस्सा ज़रूरतमंद व्यक्तियों को दान करने की वकालत की।
- **लैंगिक समानता:**
 - उनके अनुसार, 'महिलाओं के साथ-साथ पुरुष भी ईश्वर की कृपा को साझा करते हैं और अपने कार्यों के लिये समान रूप से ज़िम्मेदार होते हैं।
 - महिलाओं के लिये सम्मान और लैंगिक समानता शायद उनके जीवन से सीखने वाला सबसे महत्वपूर्ण सबक है।
- **शांति स्थापना:**
 - भारतीय दर्शन के अनुसार, गुरु वह है जो रोशनी (अर्थात् ज्ञान) प्रदान करता है, संदेह को दूर करता है और सही रास्ता दिखाता है।
 - इस संदर्भ में गुरु नानक देव के विचार दुनिया भर में शांति, समानता और समृद्धि को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं।

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/guru-nanak-dev-jayanti>